Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 09/October/2025 **IJRAW:** 2025; 4(11):224-228 **Accepted:** 22/November/2025

युवाओं में विवाह में विलंब करने के कारणः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

*[1]रजनी बघेल

*[1]शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, श्री वार्ष्णेय कॉलेज, अलीगढ़, डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

विवाह भारतीय समाज में एक ऐसी सामाजिक संस्था है जो व्यक्तिगत, पारिवारिक, और सामुदायिक जीवन को जोड़ने का आधार रही है। यह न केवल दो व्यक्तियों के बीच एक बंधन है, बल्कि सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों, और आर्थिक जिम्मेदारियों को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। प्रस्तुत शोध पत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जनपद में 20–40 वर्ष की आयु के 100 युवाओं (50 सरकारी नौकरी और 50 निजी नौकरी करने वाले) पर आधारित है, जो विवाह में विलंब के कारणों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करता है। अध्ययन में प्राथमिक डेटा का उपयोग किया गया है, जिसमें प्रश्नावली और साक्षात्कार शामिल हैं। युवाओं में विवाह विलंब के मुख्य कारणों में आर्थिक स्थिरता, शिक्षा और करियर प्राथमिकताएं, सामाजिक परिवर्तन, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता शामिल हैं। सरकारी नौकरी वाले युवा स्थायी आय की तलाश में विवाह टालते हैं, जबकि निजी नौकरी वाले आर्थिक अनिश्चितता के कारण ऐसा करते हैं। इसमें लिंग आधारित अंतर भी स्पष्ट हैं, जहां महिलाएं स्वतंत्रता को प्राथमिकता देती हैं।

मुख्य शब्दः युवा, विवाह, संस्था, विवाह विलंब के कारण,सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन, लैंगिंक अंतर।

प्रस्तावना

विवाह भारतीय समाज में एक ऐसी सामाजिक संस्था है जो व्यक्तिगत, पारिवारिक, और सामुदायिक जीवन को जोड़ने का आधार रही है। यह न केवल दो व्यक्तियों के बीच एक बंधन है, बल्कि सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों, और आर्थिक जिम्मेदारियों को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। परंपरागत रूप से, भारत में विवाह की आयु अपेक्षाकृत कम रही है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां सामाजिक दबाव और पारिवारिक अपेक्षाएं जल्दी विवाह को प्रोत्साहित करती हैं। उदाहरण के लिए, 20वीं शताब्दी के मध्य तक, अधिकांश युवा 18–22 वर्ष की आयु में विवाह कर लेते थे, जो परिवार की निरंतरता और सामाजिक स्थिरता को सुनिश्चित करता था। हालांकि, हाल के दशकों में, शहरी और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में युवाओं में विवाह की आयु में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS&5, 2019 & 21) के अनुसार, भारत में पुरुषों की औसत विवाह आयु 25.9 वर्ष और महिलाओं की 22.1 वर्ष हो गई है, जो पिछले दशकों की तुलना में काफी अधिक है (IIPS & ICF, 2021)। यह परिवर्तन आधुनिकीकरण, शहरीकरण, शिक्षा, और वैश्वीकरण जैसे कारकों का परिणाम है, जो युवाओं के विवाह संबंधी निर्णयों को प्रभावित कर रहे हैं।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश का अलीगढ़ जनपद, जो अपनी मिश्रित ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या और शैक्षिक–आर्थिक विविधता के लिए जाना जाता है, इस बदलाव का एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। अलीगढ़ में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय जैसे शैक्षिक संस्थानों और बढ़ते रोजगार अवसरों ने युवाओं के जीवन में नए आयाम जोड़े हैं। यहां की युवा पीढ़ी, विशेष रूप से 20–40 वर्ष की आयु वर्ग के युवा, विवाह में विलंब कर रहे हैं। यह विलंब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित है। उदाहरण के लिए, सरकारी नौकरियों में स्थिरता की तलाश और निजी क्षेत्र में अनिश्चितता युवाओं को विवाह के निर्णय को स्थगित करने के लिए प्रेरित करती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह परिवर्तन आधुनिकीकरण सिद्धांत (Modernization Theory) से जुड़ा है, जहां औद्योगीकरण और शहरीकरण पारंपरिक मूल्यों को चुनौती

***Corresponding Author:** रजनी बघेल

देते हैं। आधुनिकीकरण ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया है, जिससे युवा अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को परिवार की अपेक्षाओं से ऊपर रखते हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह परिवर्तन आधुनिकीकरण सिद्धांत (Modernization Theory) से जुड़ा है, जहां औद्योगीकरण और शहरीकरण पारंपरिक मूल्यों को चुनौती देते हैं। आधुनिकीकरण ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया है, जिससे युवा अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को परिवार की अपेक्षाओं से ऊपर रखते हैं। इसके अलावा, वैश्वीकरण ने पश्चिमी जीवनशैली को अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ाई है, जैसे डेटिंग और प्रेम विवाह, जो पारंपरिक व्यवस्थित विवाह की प्रक्रिया को जटिल बनाते हैं।

शोध उद्देश्य

- विवाह में विलंब के सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक कारणों की पहचान करना।
- सरकारी और निजी नौकरी करने वाले युवाओं के बीच तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर इन कारणों की व्याख्या करना।
- लिंग आधारित अंतरों का विश्लेषण करना।

शोध महत्व

यह अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें 100 उत्तरदाताओं (50 सरकारी और 50 निजी नौकरी वाले) से प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से डेटा संग्रह किया गया है। अध्ययन का महत्व इसलिए है क्योंकि यह अर्ध–शहरी क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तनों को समझने में योगदान देता है और युवाओं की चुनौतियों को संबोधित करने के लिए नीतियों का आधार प्रदान करता है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहां जनसंख्या संरचना बदल रही है, विवाह में विलंब का प्रभाव जनसांख्यिकीय संतुलन, परिवार की संरचना, और सामाजिक स्थिरता पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, देर से विवाह से जन्म दर में कमी और एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि हो रही है, जो सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों पर दबाव डालती है।

साहित्य समीक्षा

विवाह में विलंब एक वैश्विक और भारतीय संदर्भ में एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन है, जिसे समाजशास्त्रीय साहित्य ने आधुनिकीकरण, शहरीकरण, और वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप देखा है। विवाह में विलंब के कारणों को समझने के ये स्रोत सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, और लिंग आधारित कारकों पर केंद्रित हैं।

आर्थिक कारक

आर्थिक स्थिरता विवाह में विलंब का एक प्रमुख कारण है। डोमर और लॉरेंस (1991) ने अपने शोध पत्र में पाया कि आर्थिक अनिश्चितता और बेरोजगारी युवाओं को विवाह स्थगित करने के लिए प्रेरित करती है, क्योंकि विवाह से जुड़े वित्तीय दायित्वों को पूरा करना कठिन हो जाता है। यह अध्ययन यूरोपीय संदर्भ में है, लेकिन भारतीय समाज में भी लागू होता है, जहां युवा घर, गाड़ी जैसी संपत्ति प्राप्त करने तक विवाह टालते हैं। भारतीय संदर्भ में, सिंह और गौतम (2018) ने पाया कि शहरी क्षेत्रों में नौकरी की तलाश और आर्थिक स्वतंत्रता की इच्छा ने विवाह की आयु को बढ़ाया है। विशेष रूप से, निजी क्षेत्र में कार्यरत युवा अनिश्चित आय के कारण विवाह में देरी करते हैं। वेबर (1978) की पुस्तक "Economy and Society" आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं के बीच संबंध को दर्शाती है। वेबर तर्क देते हैं कि आधुनिकीकरण व्यक्तिवाद को बढ़ावा देता है, जो युवाओं को आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने तक विवाह टालने के लिए प्रेरित करता है।

शिक्षा और करियर

उच्च शिक्षा और करियर पर ध्यान केंद्रित करना भी विवाह में विलंब का एक प्रमुख कारण है। जेप्सन और जेप्सन (2002) ने तर्क दिया कि उच्च शिक्षित व्यक्ति, विशेष रूप से महिलाएं, करियर स्थापना को प्राथमिकता देते हैं, जिससे विवाह में देरी होती है। यह शोध पत्र शहरी युवाओं पर आधारित है और दर्शाता है कि शिक्षा विवाह की आयु को 3–5 वर्ष बढ़ाती है। भारतीय संदर्भ में, शर्मा (2020) ने अपनी थीसिस में दर्शाया कि कॉलेज–शिक्षित युवा, विशेष रूप से सरकारी नौकरी की तैयारी करने वाले, स्थायी रोजगार प्राप्त करने तक विवाह टालते हैं। सिंह (2000) की पुस्तक "Modernization and Social Change in India" आधुनिकीकरण के प्रभाव को रेखांकित करती है, जहां शिक्षा व्यक्तिवाद को बढ़ावा देती है। यह पुस्तक दर्शाती है कि शहरीकरण ने युवाओं को करियर पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया है। राव (2012) की "Sociology of Indian Society" शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बीच संबंध को विस्तार से समझाती है। राव तर्क देते हैं कि उच्च शिक्षा युवाओं को पारंपरिक भूमिकाओं से मुक्त करती है, जिससे विवाह में देरी होती है।

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन

आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण ने सामाजिक मानदंडों को बदला है। गुप्ता (2019) ने तर्क दिया कि शहरीकरण ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया है, जिससे युवा अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को पारिवारिक अपेक्षाओं से ऊपर रखते हैं। इसके अतिरिक्त, डेटिंग और प्रेम–विवाह की बढ़ती स्वीकार्यता ने भी विवाह की प्रक्रिया को जटिल बनाया है। भारतीय संदर्भ में, कुमार (2021) ने पाया कि अर्थ–शहरी क्षेत्रों में सामाजिक दबाव कम होने से युवा स्वतंत्र निर्णय ले रहे हैं। उबेरोई (1993) की "The Family in India: Critical Essays" विवाह को सांस्कृतिक संस्था के रूप में विश्लेषित करती है और आधुनिकीकरण के प्रभावों पर चर्चा करती है। कपाड़िया (1996) की "Marriage and Family in India" पारंपरिक और आधुनिक

विवाह प्रथाओं की तुलना करती है। श्रीनिवास (1995) की "Social Change in Modern India" संस्कृतीकरण और पश्चिमीकरण के प्रभावों को समझाती है। स्टर्न (2003) की "Changing India" मध्यम वर्ग के उदय को दर्शाती है, जो युवाओं में विवाह में विलंब का कारण है।

लिंग आधारित अंतर

महिलाओं और पुरुषों में विवाह में विलंब के कारण भिन्न हो सकते हैं। बत्रा और रीमा (2017) ने पाया कि महिलाएं करियर और स्वतंत्रता को प्राथमिकता देती हैं, जबकि पुरुष आर्थिक जिम्मेदारियों के कारण विवाह टालते हैं। यह लिंग आधारित अंतर भारतीय समाज में विशेष रूप से स्पष्ट है, जहां महिलाओं की शिक्षा और रोजगार बढ़ने से उनकी विवाह आयु में वृद्धि हुई है। ड्यूब (1997) की "Gender and Society in India" लिंग भूमिकाओं को विश्लेषित करती है। देसाई और कृष्णराज (1987) की "Women and Society in India" महिलाओं की बदलती भूमिकाओं पर केंद्रित है। होक्शील्ड (1989) की "The Second Shift" महिलाओं पर दोहरी जिम्मेदारियों को दर्शाती है।

उपरोक्त साहित्य ने विवाह में विलंब के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है, लेकिन अलीगढ़ जैसे अर्ध–शहरी क्षेत्रों में सरकारी और निजी नौकरी करने वाले युवाओं पर तुलनात्मक अध्ययन सीमित हैं।

शोध पद्धति (Methodology)

शोध प्ररचना (Research Design)

प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णनात्मक और तुलनात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है, जो प्राथमिक आँकड़ों संग्रह पर केंद्रित है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग करता है। तुलनात्मक सरकारी और निजी नौकरी समूहों के बीच अंतर की जांच करता है।

अध्ययन क्षेत्र

शोध अध्ययन का क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश का अलीगढ़ जनपद है, जो अपनी मिश्रित जनसंख्या के लिए जाना जाता है। अलीगढ़ में शैक्षिक और आर्थिक विविधता है, जो इस अध्ययन के लिए उपयुक्त है। जनपद की जनसंख्या लगभग 36 लाख है, जिसमें क्षेत्र 40% है।

नमूना चयन

शोध के लिए 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिनमें 50 सरकारी नौकरी करने वाले और 50 निजी नौकरी करने वाले युवा शामिल हैं। सभी उत्तरदाता 20–40 वर्ष की आयु के हैं और अलीगढ़ जनपद के निवासी हैं। नमूना चयन के लिए सुविधाजनक नमूनाकरण का उपयोग किया गया। लिंग संतुलन के लिए, प्रत्येक समूह में 25 पुरुष और 25 महिलाएं शामिल की गईं। नमूना चयन में सरकारी कार्यालयों (जैसे पोस्ट ऑफिस, बैंक) और निजी कंपनियों (जैसे IT फर्म, रिटेल) से संपर्क किया गया।

डेटा संग्रह

प्राथमिक आँकड़े संकलन के लिए दो मुख्य उपकरण उपयोग किए गए: एक संरचित प्रश्नावली तैयार की गई, जिसमें 30 प्रश्न शामिल थे। ये प्रश्न विवाह में विलंब के कारणों पर केंद्रित थे। लिकर्ट स्केल और खुले प्रश्न शामिल थे। प्रश्नावली को 100 उत्तरदाताओं से भरा गया।

साक्षात्कार: प्रत्येक समूह से 10 उत्तरदाताओं (कुल 20) के साथ अर्ध–संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए।

डेटा विश्लेषण

डेटा विश्लेषण के लिए SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया। मात्रात्मक डेटा के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी और t-test का उपयोग किया गया। गुणात्मक आँकड़ों का थीमैटिक विश्लेषण किया गया।

आंकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण

1. उत्तरदाताओं का प्रोफाइल

शोध में शामिल 100 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय जानकारी निम्नलिखित है:

- **आयु:** औसत आयु 28.5 वर्ष (सरकारी: 30.2 वर्ष, निजी: 26.8 वर्ष)।
- **लिंग:** 50 पुरुष और 50 महिलाएं (प्रत्येक समूह में 25 पुरुष और 25 महिलाएं)।
- **शिक्षा:** 60% उत्तरदाताओं के पास स्नातकोत्तर डिग्री (सरकारी 80%, निजी 40%)।
- **आय:** सरकारी नौकरी समूह की औसत मासिक आय ₹50,000, निजी नौकरी समूह की ₹35,0001

2. मात्रात्मक परिणाम

प्रश्नावली से प्राप्त डेटा को SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग करके विश्लेषित किया गया। वर्णनात्मक सांख्यिकी (प्रतिशत, औसत) और t-test का उपयोग सरकारी और निजी नौकरी समूहों के बीच अंतर की तुलना के लिए किया गया। निम्नलिखित तालिकाएं प्रमुख निष्कर्षों को दर्शाती हैं।

तालिका 1: विवाह में विलंब के प्रमुख कारण (प्रतिशत)

कारण	सरकारी नौकरी N = 50	निजी नौकरी N = 50	t - Test (P = Value)
आर्थिक स्थितिरता	70%	80%	0.03*
शिक्षा और कैरियर	75%	60%	0.04*
सामाजिक दबाव में कमी	50%	55%	0.12
सही जीवनसाथी की खोज	60%	65%	0.08
व्यक्तिगत स्वतंत्रता	45%	50%	0.15

नोटः (P < 0.05) सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर दर्शाता है।

विश्लेषण

आर्थिक स्थिरताः निजी नौकरी समूह में 80% ने आर्थिक अनिश्चितता को प्रमुख कारण बताया, जबकि सरकारी नौकरी समूह में 70% ने स्थायी आय की तलाश को उल्लेख किया। t–test (p=0.03) से पता चलता है कि निजी नौकरी समूह में आर्थिक कारक अधिक प्रभावशाली है।

शिक्षा और कैरियरः सरकारी नौकरी समूह में 75% ने करियर बनाने और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को कारण बताया, जबकि निजी नौकरी समूह में यह 60% था। t-test (p=0.04) से अंतर स्पष्ट है।

सामाजिक दबावः दोनों समूहों में सामाजिक दबाव में कमी (50-55%) देखी गई, लेकिन यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है (p=0.12)।

सही जीवनसाथीः दोनों समूहों में यह कारण महत्वपूर्ण था (60–65%), लेकिन अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं (p=0.08)।

व्यक्तिगत स्वतंत्रताः निजी नौकरी समूह में 50% ने स्वतंत्रता को प्राथमिकता दी, लेकिन अंतर महत्वपूर्ण नहीं (p=0.15)।

तालिका 2: लिंग आधारित अंतर (प्रतिशत)

कारण	पुरुष N = 50	महिला N = 50	t - Test (P = Value)
आर्थिक स्थितिरता	75%	65%	0.06
शिक्षा और कैरियर	60%	70%	0.04*
सामाजिक दबाव में कमी	55%	50%	0.11
सही जीवनसाथी की खोज	60%	65%	0.09
व्यक्तिगत स्वतंत्रता	40%	60%	0.02*

नोटः (P < 0.05) (आर्थिक P Value 0.05 से कम) सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर दर्शाता है।

विश्लेषण

आर्थिक स्थिरताः पुरुषों (75%) में यह कारण महिलाओं (65%) की तुलना में अधिक था, लेकिन अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं (p=0.06)।

शिक्षा और कैरियरः महिलाओं (70%) ने पुरुषों (60%) की तुलना में कैरियर को अधिक प्राथमिकता दी (p=0.04)। अर्थात दोनों में सार्थक अंतर है।

व्यक्तिगत स्वतंत्रताः महिलाओं (60%) में यह कारण पुरुषों (40%) की तुलना में अधिक प्रभावशाली था (p=0.02)।

3. गुणात्मक परिणाम

20 उत्तरदाताओं (10 सरकारी, 10 निजी) के साथ अर्ध–संरचित साक्षात्कार से निम्नलिखित थीम्स उभरीं:

आर्थिक दबावः निजी नौकरी वाले एक उत्तरदाता ने कहा, ''मेरी आय अनिश्चित है, और विवाह के बाद परिवार की जिम्मेदारी उठाना मुश्किल होगा।'' सरकारी नौकरी वाले ने कहा, ''मैं स्थायी नौकरी और घर खरीदने के बाद ही विवाह करूंगा।''

करियर प्राथमिकताः सरकारी नौकरी वाली एक महिला ने बताया, ''मैं पहले अपनी नौकरी में स्थायी होना चाहती हूं, फिर विवाह के बारे में सोचूंगी।'' निजी नौकरी वाले ने करियर की अनिश्चितता को कारण बताया।

सामाजिक परिवर्तनः कई उत्तरदाताओं ने डेटिंग और प्रेम–विवाह की बढ़ती स्वीकार्यता को उल्लेख किया। एक उत्तरदाता ने कहा, ''अब परिवार इतना दबाव नहीं डालता, इसलिए मैं अपने समय पर निर्णय ले सकता हूं।''

लिंग आधारित अंतरः महिलाओं ने स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया, जैसे ''मैं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हूं।'' पुरुषों ने पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्रमुख कारण बताया।

4. तुलनात्मक विश्लेषण

सरकारी बनाम निजी नौकरीः सरकारी नौकरी समूह में करियर स्थापना और स्थायी आय की तलाश प्रमुख थी। यह समूह प्रतियोगी परीक्षाओं और नौकरी में स्थिरता पर ध्यान देता है।

निजी नौकरी समूह में आर्थिक अनिश्चितता और उपयुक्त जीवनसाथी की खोज अधिक प्रभावशाली थी। यह समूह अनिश्चित आय और नौकरी की अस्थिरता से प्रभावित है।

लिंग आधारित अंतरः महिलाएं व्यक्तिगत स्वतंत्रता और करियर को प्राथमिकता देती हैं, जो उनकी बढ़ती शैक्षिक और आर्थिक भागीदारी को दर्शाता है। पुरुष आर्थिक जिम्मेदारियों और पारिवारिक अपेक्षाओं पर अधिक ध्यान देते हैं।

प्रमुख निष्कर्ष

यह अध्ययन दर्शाता है कि अलीगढ़ जनपद के युवाओं में विवाह में विलंब के कारण बहुआयामी हैं, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं –

आर्थिक स्थिरताः निजी नौकरी समूह में आर्थिक अनिश्चितता (80%) और सरकारी नौकरी समूह में स्थायी आय की तलाश (70%) प्रमुख कारण हैं। निजी नौकरी समूह में आर्थिक कारक अधिक प्रभावशाली हैं (p=0.03)।

शिक्षा और करियरः सरकारी नौकरी समूह में 75% ने करियर स्थापना को कारण बताया, विशेष रूप से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी। निजी नौकरी समूह में यह 60% था (p=0.04)।

सामाजिक परिवर्तनः दोनों समूहों में सामाजिक दबाव में कमी (50–55%) देखी गई, जो व्यक्तिवाद और आधुनिकीकरण का परिणाम है।

लिंग आधारित अंतरः महिलाओं (60%) ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता दी, जबकि पुरुषों (75%) ने आर्थिक जिम्मेदारियों को (p=0.02)।

उपयुक्त जीवनसाथी: दोनों समूहों में यह कारण महत्वपूर्ण था (60–65%), जो प्रेम विवाह और व्यक्तिगत पसंद की बढ़ती स्वीकार्यता को दर्शाता है।

सुझाव

जागरूकता कार्यक्रम: युवाओं को आर्थिक योजना और विवाह की जिम्मेदारियों के लिए तैयार करने हेतु कार्यशालाएं आयोजित की जाएं।

नौकरी स्थिरता: निजी क्षेत्र में रोजगार की सुरक्षा बढ़ाने के लिए नीतियां बनाई जाएं, जैसे बीमा और पेंशन योजनाएं।

सामाजिक समर्थन: परिवारों और समुदायों को आधुनिक मूल्यों के साथ संतुलन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

शिक्षा और करियर मार्गदर्शन: युवाओं को करियर और विवाह के बीच संतुलन बनाने के लिए परामर्श सेवाएं प्रदान की जाएं।

संदर्भ (References)

1. Desai N & Krishnaraj M. Women and Society in India. New Delhi: Ajanta Publications, 1987.
2. Dube L. Gender and Society in India. New Delhi: Oxford University Press, 1997.
3. Hochschild A. The Second Shift: Working Families and the Revolution at Home. New York: Viking Penguin, 1989.
4. Kapadia KM. Marriage and Family in India. Mumbai: Oxford University Press, 1996.
5. Rao CNS. Sociology of Indian Society. New Delhi: S. Chand Publishing, 2012.
6. Singh Y. Modernization and Social Change in India. New Delhi: Manohar Publishers, 2000.
7. Srinivas MN. Social Change in Modern India. Hyderabad: Orient Blackswan, 1995.
8. Stern RW. Changing India: Bourgeois Revolution on the Subcontinent. Cambridge: Cambridge University Press, 2003.
9. Uberoi P. The Family in India: Critical Essays. New Delhi: Oxford University Press, 1993.
10. Weber M. Economy and Society: An Outline of Interpretive Sociology. Berkeley: University of California Press, 1978.
11. Batra R & Reema S. Gender differences in marriage timing in India. *Indian Journal of Gender Studies*. 2017; 24(2):189-210. https://doi.org/10.1177/0971521517716778
12. Domar AD & Lawrence Z. The impact of economic instability on marriage timing. *Journal of Marriage and Family*. 1991; 53(2):321-330. https://doi.org/10.2307/352902
13. International Institute for Population Sciences (IIPS) & ICF. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019-21: India. Mumbai: IIPS.
14. Jepson L & Jepson C. Education and delayed marriage: A study of urban youth. Social Science Review. 2002; 76(4):567-589. https://doi.org/10.1086/ 341183
15. Singh R & Gautam S. Economic factors and delayed marriage in urban India. *Indian Journal of Sociology*. 2018 45(3):123-135